देशभक्त

(प्यारे चंदन को समर्पित)
एक अफ़्रीकी सिर
चेग्वेरा को नमस्कार करता है
आरती कहीं भी उतारी जा सकती है...
अंतरिक्ष में....पृथ्वी पर
क्यूबा में...बंगाल में
समय स्वतंत्र रूप में कोई चीज़ नहीं
समय को अर्थ देने के लिये
पल जिए जाते हैं, वर्ष बिताए जाते हैं...
भिवंडी और श्रीकाकुलम् में फ़र्क समझा जाता है
मैं सूर्य से मुकरा, घास से मुकरा
कुर्सी से, मेज से
और इसीलिए मैंने लॉन की धूप में बैठकर
चाय नहीं पी
बंद कमरे की दीवारों पर फ़ायर किए हैं
- - - - - - - - -

यह भारत है-
जो छोटे-से ग्लोब पर एशिया की पूंछ बनकर
लटका है
जिसकी शक्ल पतंगे जैसी है
और जो पतंगे की तरह जल जाने के लिये
व्याकुल है
और यह पंजाब है-
जहां न कोमल दूब बिछी है
न फूलों-भरे वृक्ष
चैत आता है, लेकिन उसका रंग शोख नहीं
पाता...
उदास शामों के साथ टकराकर
जिंदगी का सच कई बार गुजरा है
लेकिन हर बार सहनशीलता का मुखौटा पहनने
से पहले
मैं हर दिशा के क्षितिज के साथ टकरा गया हूं
चांद जब गोवा के रंगीन तटों पर
या कश्मीर की जीवत वादी में
चारों ओर सुस्ताया पड़ा होता है
तब वे पल होते हैं
जब मैं ऊंचे हिमालयवाली
अपनी पितृभूमि पर बहुत मान करता हूं
जिसने हम पहाड़ी पत्थरों-जैसे
अनगिन लोगों को पैदा किया
और पत्थरों की तरह ही जाने के लिए छोड़ दिया
और तब मुझे वह ढिठाई
जिसका नान जिंदगी है
रूठी हुई प्रेमिका की तरह प्यारी लगती है
और मुझे लाज आती है
कि मैं घोंघे की तरह बंद हूं
जबकि मुझे अमीबा की तरह फ़ैलना चाहिए।

-पाश की कविता

जेएनयू को बर्बाद करने की संघी-मीडिया की साजिश

-प्रमोद रंजन

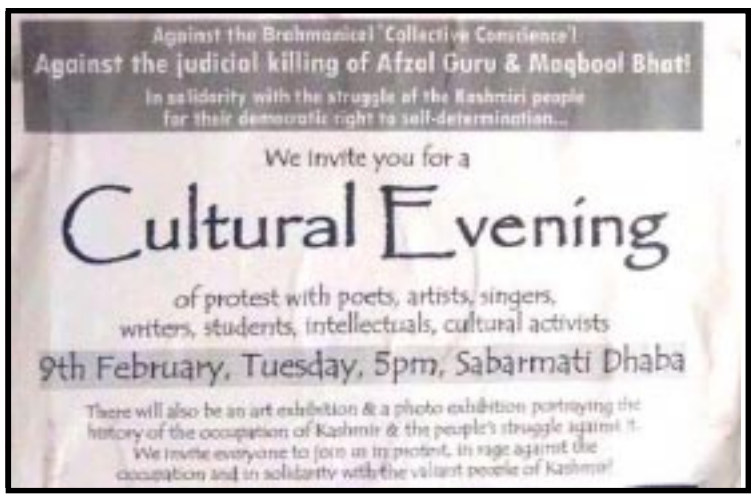

भारत का दलाल मीडिया चाहे वो टीवी हो या अखबार देश की जानी-मानी जवाहर लाल नेहरू यूनिवर्सिटी (जेएनयू) के बारे में गलत तरह की जानकारी दे रहे हैं और इसे लगभग देशद्रोहियों का अड्डा बता दिया गया है। ज्यादातर लोगों को यहां चल रहे हंगामे के बारे में आधी-अधूरी या भ्रामक जानकारी है। अधिकांश लोग यह मान बैठे हैं कि 9 फरवरी को एक लेफ्ट छात्र संगठन की ओर से कार्यक्रम हुआ, जिसमें जेएनयू छात्र संगठन के अध्यक्ष कन्हैया कुमार और उनके साथियों ने भारत मुर्दाबाद, पाकिस्तान जिंदाबाद, भारत को बर्बाद करेंगे और कश्मीर को आजादी दो जैसे नारे लगाए। तथ्य यह नहीं है। घटनाक्रम इस प्रकार हुआ -

- एक लेफ्ट छात्र संगठन के सदस्य रहे कुछ छात्र-छात्राओं ने एक पोस्टर जारी किया, जिसमें ब्राह्मणवादी सामूहिक चेतना को संतुष्ट करने के लिए अफजल गुरू और मकबूल भटट की न्यायिक हत्या के विरोध में सांस्कृतिक संध्या के आयोजन की सूचना दी गयी। (पोस्टर देखें)। पोस्टर में यह भी कहा गया कि वे कश्मीरी लोगों के संघर्ष में साथ हैं तथा उन्हें आत्म निर्णय का अधिकार मिलना चाहिए। यह आयोजन 9 फरवरी को जेएनयू के साबरमती ढाबा ग्राऊंड में शाम पांच बजे रखा गया। आयोजन में मुख्य रूप से कविता पाठ होना था तथा गीत गाये जाने थे।

- इस आयोजन के खिलाफ आरएसएस और बीजेपी से जुड़े छात्र संगठन एबीवीपी ने कुलपति को शिकायत की तथा आयोजन के समय उसका विरोध करने के लिए उसके लगभग 10-15 छात्र पहुंच गये। इस बीच कुछ धक्का मुक्की भी हुई। लेकिन कार्यक्रम चलता रहा। गौरतलब है कि जेएनयू प्रशासन ने इस कार्यक्रम के लिए अनुमति देने के बाद एबीवीपी के दवाब में ठीक कार्यक्रम के समय आकर बताया कि अनुमति निरस्त कर दी गयी है।

- इसी समय 5-6 लड़के, जो मुंह पर रूमाल बांधे थे (जिनके बारे में कहा जा रहा है कि वे जेएनयू के ही कशमीरी छात्र थे), उन्होंने इस आयोजन से थोड़ी दूर पर एक अंधेरे कोने में नारा लगाया गो इंडिया, गो बैक, कश्मीर की आजादी तक जंग रहेगी, भारत की बर्बादी तक जंग रहेगी। शब्द यही नारे थे। ये नारे वे तीन चार बार ही बोल पाए कि आयोजकों ने उन्हें रोक दिया। भारत मुर्दाबाद और पाकिस्तान जिंदाबाद जैसा कोई नारा वहां मौजूद किसी व्यक्ति ने सुनने का दावा नहीं किया है। हां, इधर एक विडियो जरूर सामने आया है,जिसके बारे में कहा जा रहा है कि एबीवीपी के लोगों ने खुद ही ये नारे शायद आयोजन वाले ग्राऊंड के किसी दूसरे कोने पर जाकर खुद ही लगाए। कितने अफजल मारोगे, हर घर से अफजल निकलेगा वाला नारा शायद किसी और आयोजन का है। वैसे भी उस नारे का आशय यह रहा है कि इन हत्याओं से क्या हासिल होगा, हालात बदलने होंगे। मुसलमान युवाओं को उस दिशा में जाने से रोकना होगा। उनका घेटोकरण बंद करना होगा।

- उपरोक्त कार्यक्रम के बाद एबीवीपी ने इसके खिलाफ दिल्ली के वसंतकुंज थाने में एक शिकायत उसी दिन (9 फरवरी को ही) की। अगले दिन वे भाजापा सांसद महेश गिरी से मिले। महेश गिरी ने 11 फरवरी को इसके खिलाफ एक शिकायत दी, जिसके आधार पर पुलिस ने एफआईआर दर्ज की।

- इसी बीच 11 फरवरी को एबीवीपी छात्रों द्वारा उपरोक्त आयोजन में बाधा डालने तथा गुंडागर्दी करने के खिलाफ भी जेएनयू छात्र संघ के आह्वान पर एक सभा हुई, जिसमें कन्हैया कुमार ने भाषण दिया तथा आजादी वाला नारा भी लगाया। यह नारा क्या है, इसे भी शायद कई लोग नहीं जानते। यह एक गीतनुमा नारा है, जो काफी देर तक चलता है तथा जेएनयू के विद्यार्थी अपने लगभग सभी आयोजनों में इसे लगाते हैं। इस लंबे, बेहद आकर्षक और मानवीयता से भरपूर नारे को इस प्रकार लिखित शब्दों में व्यक्त करना बड़ा कठिन है। उसे आप सुनकर ही ग्रहण कर सकते हैं। इस नारे में पितृसत्यता से आजादी की बात है, शादी करने और न करने की आजादी की मांग, जीविका चुनने की आजादी की मांग है, सामंतवाद से आजादी की मांग है, गरीबी से आजादी की बात है, जातिवाद से आजादी का संकल्प है। यौन हिंसा से आजादी, मेट्रो में आजादी, बसों में आजादी, सड़कों पर आजादी, पूंजीवाद से आजादी, जीने की आजादी, मनुवाद से आजादी, खाने की आजादी..हम लड़ के लेंगे आजादी.. अंत में इस नारे में आता है कि सभी ओर आजादी की मांग उठ रही है। बिहार से, उड़ीसा से, बंगाल से, कशमीर से, केरल से - सभी जगहों से आजादी की मांग है। यह अलागाववादी नारा कतई नहीं है। इसमें सिर्फ और सिर्फ मनुष्य मात्र की स्वतंत्रता और गरिमा को सुदृढ़ करने की अपील है। यह नारा न सिर्फ सभी के हृदयों को छूने वाला है बल्कि इसके बड़े गहरे दार्शनिक अर्थ भी हैं। टीवी पर जिस तरह इस नारे के सिर्फ एक हिस्से को दिखाया गया, उसे पीत-पत्रकारिता के इतिहास में स्वर्णाक्षरों में दर्ज किया जाना चाहिए।

- अब जरा इस लड़ाई में लगे छात्र छात्राओं की सामाजिक पृष्ठभूमि भी जान लें। पुलिस इस केस में 20 छात्रों की खोज कर रही है। इस लिस्ट में सबसे ऊपर नाम उमर नाम के किसी लड़के का है। जाहिर है उमर मुसलमान हैं। उनका एक संबंध कश्मीर से भी है लेकिन उनका परिवार कई पीढियों से दिल्ली का बाशिंदा है। जिस कन्हैया (जेएनयूएसयू अध्यक्ष) को पुलिस ने गिरफ्तार किया है, वे बिहार के हैं तथा एक निम्न मध्यवर्गीय भूमिहार परिवार से संबंध रखते हैं। उनकी मां आंगनवाड़ी सेविका हैं। एक और लड़की है, जो बंगाल के ब्राह्मण परिवार से है। लिस्ट में शेष नामों में कम से कम 70 फीसदी गैर द्विज हिंदू हैं। यानी, दलित या पिछडे, अति पिछड़े। पुलिस की हिट लिस्ट में सबसे ऊपर नाम बिरसा, आम्बेडकर, फूले स्टूडेंट्स एसोसिएशन के तीन छात्रों के हैं। वे तीनों हीं कैंपस में आदिवासी, दलित और पिछडे छात्र-छात्राओं का नेतृत्व करने वाले बड़े प्रखर लोग हैं। इस सामाजिक पृष्ठभूमि से आपको यह समझने में आसानी हो जाएगी कि यह लड़ाई सांप्रदायिक तो कतई नहीं है। न ही कोई ब्रह्मणों की आपसी लड़ाई है, या वेमुला के पक्ष में हो रहे विरोध प्रदर्शनों को भटकाने के लिए कोई संघी-कम्युनिस्ट मैच फिक्सिंग है, जैसा कि कुछ लोग शायद अज्ञानतावश कह रहे हैं। आप वेमुला के लिए दिल्ली में हुए विभिन्न प्रदर्शनों के विडियो देखिए, इन लोगों के चेहरे उसकी अग्रिम पंक्तियों में नारा लगाते हुए दिखेंगे।

- यह दमन इसलिए शुरू हुआ है क्योंकि ज्ञान के क्षेत्र में ये वंचित तबके कुछ ज्यादा ही आने लगे हैं। जेएनयू में नामांकन के लिए जो आरक्षण मॉडल है, वह देश के लिए भी एक आदर्श हो सकता है। वंचित तबकों और महिलाओं को इस मॉडल से दुगना फायदा मिला है। पढ़ाई पर होने वाले खर्च के मामले में बेहद सस्ती यह यूनिवर्सिटी आर्थिक रूप से कमजोर तबकों को एक सशक्त कंधा उपलब्ध करवाती है। 2006 के बाद से अन्य पिछडा वर्ग (ओबीसी) के लिए लागू हुए आरक्षण के बाद से तो इस यूनिवर्सिटी में वंचित तबकों के छात्र-छात्राओं की संख्या कम से कम 55 फीसदी पहुंच गयी है, जो लगातार बढ़ती ही जा रही है। और ये सिर्फ आए नहीं हैं। वे अब हस्तक्षेप कर रहे हैं और सिर के बल खड़े विमर्शों को उनकी सही दिशा दे रहे हैं। वे अब तक आकादमिक क्षेत्र के लिए अछूते रहे नये अनुभवों और विचारों के साथ आए हैं, जिसका असर यह हुआ है कि मानविकी विषयों का ठस हो चला शोध क्षेत्र एक नयी उर्जा से भर उठा है। किसी विभाग में इन दिनों हो रहे शोधों की सूची देख लीजिए। आपको पता लग जाएगा कि वे समेकित रूप से अपना एक इतिहास और दर्शन रच रहे हैं। बहरहाल, यह स्पष्ट होना चाहिए कि जेएनयू में कथित रूप से अलगाववादी नारे न आयोजकों ने लगाए, न ही कन्हैया ने। और रही बात अफजल गुरू पर कार्यक्रम करने की, तो इन जटिल मुद्दो पर अगर जेएनयू में चर्चा नहीं होगी तो कहां होगी? हमारी न्याय प्रणाली ऐसी है जिसमें कोर्ट अपने फैसले में ही यह लिख देता है कि वह यह फांसी की सजा महज आतंकवाद के विरोध में देश की सामूहिक चेतना को संतुष्ट करने के लिए सुना रहा है, तो क्या यह चर्चा का विष्य नही होना चाहिए कि ऐसी विकृत सामूहिक चेतना का निर्माण कैसे हो रहा है।

हमें यह भी चर्चा करनी चाहिए कि वे कौन से लोग हैं जो आतंकवाद जैसी क्रूरतम कारवाई को धर्म की आड़ देते हैं, लेकिन हमें इस चर्चा से भी परहेज नहीं करना चाहिए खून का बदले खून मांगना एक एक बर्बर मनोविकृति है, इसे एक आधुनिक राष्ट्र में कानून का जामा नहीं पहनाना चाहिए।

इन कठिन सवालों को उठाना हर देशभक्त का काम होना चाहिए। जेएनयू के स्टूडेंट्स भी यही कर रहे हैं।

घर बैठे प्राप्त करें मज़दूर मोर्चा

आज ही अपने हॉकर से कहें कोई दिक्कत हो तो शर्मा न्यूज एजेंसी से फोन नं 9811159238 पर बात करें। बल्लभगढ के पाठक अरोडा न्यूज एजेंसी से 9811477204 पर बात करें:

अन्य बिक्री केन्द्र :

1. आनंद मैगजीन सैंटर केसी रोड, एनएच-5,
2. प्रिंट फोर्ट टेलीफोन एक्सचेंज के सामने नेहरू ग्राउंड,
3. रेलवे बुक स्टाल ओल्ड रेलवे स्टेशन,
4. रैंक, 45 नीलम चौक,
5. एनआईटी रेलवे स्टेशन के बाहर बाटा चौक पुल के नीचे,
6. राम खिलावन बल्लभगढ़ बस अड्डा पुलिस चौकी के सामने,
7. हितेश ग्रोवर सैक्टर 29 पेट्रोल पम्प के पास ।
8. जितेन्द्र, बाटा सैंटर - 9971064207
9. स्थानीय अदालतों में : चैम्बर नं. 56-एस.के .जोशी - वकील साहब